फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक यंत्रों की भूमिका पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण संपन्न

कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर कानपुर देहात में आयोजित पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षक के पश्चात किसानों को प्रमाण पत्र देते प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. खलील खान, वैज्ञानिक डॉ राजेश राय, डॉक्टर दीपक मिश्रा, डॉक्टर शशिकांत आदि, छाया : आज

(आज समाचार सेवा)

कानपुर देहात, 12 सितम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के अंतर्गत फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका विषय पर आयोजित पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज सफलतापूर्वक समापन हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों एवं प्रतिभागियों को फसल अवशेषों के वैज्ञानिक एवं उचित प्रबंधन, पराली जलाने से होने वाले पर्यावरणीय एवं मृदा संबंधी दुष्प्रभावों तथा फसल अवशेषों के उपयोग की आधुनिक तकनीकों के प्रति जागरूक एवं प्रशिक्षित करना रहा। पाच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग, अवशेषों को खेत में मिलाने, अवशेषों से मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार करने तथा पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में व्यावहारिक एवं तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपलब्ध आधुनिक कृषि तकनीकों एवं यंत्रीकरण को अपनाने के लिए प्रेरित किया। समापन अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए फसल अवशेषों को समस्या के बजाय संसाधन के रूप में उपयोग करने तथा मृदा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिक अवशेष प्रबंधन तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. खलील खान ने किसानों के साथ संवाद करते हुए फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, कृषि यंत्रों के उचित उपयोग तथा मृदा स्वास्थ्य संरक्षण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। उन्होंने किसानों को खेत में फसल अवशेषों के प्रभावी प्रबंधन के लिए आधुनिक यंत्रीकरण को अपनाने के लिए भी प्रेरित किया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ राजेश राय, डॉक्टर दीपक मिश्रा, डॉक्टर शशिकांत सहित अन्य वैज्ञानिकों ने ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव के विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता की।समापन अवसर पर प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने वाले किसानों एवं प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त तकनीकी ज्ञान को अपने खेतों में अपनाने तथा अन्य किसानों को भी फसल अवशेष प्रबंधन एवं पराली न जलाने के लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 18 अंक : 75 कानपुर, रविवार 13 सितम्बर 2026 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण संपन्न

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के अंतर्गत फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका विषय पर आयोजित पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज सफलतापूर्वक समापन हुआ।प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों एवं प्रतिभागियों को फसल अवशेषों के वैज्ञानिक एवं उचित प्रबंधन, पराली जलाने से होने वाले पर्यावरणीय एवं मृदा संबंधी दुष्प्रभावों तथा फसल अवशेषों के उपयोग की आधुनिक तकनीकों के प्रति जागरूक एवं प्रशिक्षित करना रहा।

पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग, अवशेषों को खेत में मिलाने, अवशेषों से मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार करने तथा पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में व्यावहारिक एवं तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपलब्ध आधुनिक कृषि तकनीकों एवं यंत्रीकरण को अपनाने के लिए प्रेरित किया। समापन अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए फसल अवशेषों को समस्या के बजाय संसाधन के रूप में उपयोग करने तथा मृदा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिक अवशेष प्रबंधन तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया।

प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. खलील खान ने किसानों के साथ संवाद करते हुए फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, कृषि यंत्रों के उचित उपयोग तथा मृदा स्वास्थ्य संरक्षण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी साझा की।

उन्होंने किसानों को खेत में फसल अवशेषों के प्रभावी प्रबंधन के लिए आधुनिक यंत्रीकरण को अपनाने के लिए भी प्रेरित किया।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक लखनऊ, कानपुर नगर, गोरखपुर, प्रयागराज से एक साथ प्रकाशित R.N.I.No.UPHIN/2021/84863

भोलेनाथ टाइम्स

वर्ष : 05 अंक : 258
कानपुर नगर, रविवार,
13 सितम्बर 2026
मूल्य : 2 रुपया
पृष्ठ : 06

Email: bholenaththtimes@gmail.com

कानपुर नगर से प्रकाशित

भक्तों पर

अंदर के पृष्ठों पर-पेज-2-5600 करोड़ के साइबर फ्राड सिंडिकेट का पर्दाफाश, दो गिरफ्तार, 3-हर बच्चे को पढ़नी और आत्मसात करनी चाहिए पी

फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका पर कृषक प्रशिक्षण संपन्न

कानपुर नगर(बीएनटी संवाददाता)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के अंतर्गत फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका विषय पर आयोजित पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज सफलतापूर्वक समापन हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों एवं प्रतिभागियों को फसल अवशेषों के वैज्ञानिक एवं उचित प्रबंधन, पराली जलाने से होने वाले पर्यावरणीय एवं मृदा संबंधी दुष्प्रभावों तथा फसल अवशेषों के उपयोग की आधुनिक तकनीकों के प्रति जागरूक एवं प्रशिक्षित करना रहा। पाच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग, अवशेषों को खेत में मिलाने, अवशेषों से मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार करने तथा पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में व्यावहारिक एवं तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपलब्ध आधुनिक कृषि तकनीकों एवं यंत्रीकरण को अपनाने के लिए प्रेरित किया। समापन अवसर पर डा. अरुण कुमार सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए फसल अवशेषों को समस्या के बजाय संसाधन के रूप में उपयोग करने तथा मृदा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिक अवशेष प्रबंधन तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। प्रशिक्षण समन्वयक डा. खलील खान ने किसानों के साथ संवाद करते हुए फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, कृषि यंत्रों के उचित उपयोग तथा मृदा स्वास्थ्य संरक्षण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। उन्होंने किसानों को खेत में फसल अवशेषों के प्रभावी प्रबंधन के लिए आधुनिक यंत्रीकरण को अपनाने के लिए भी प्रेरित किया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डा. राजेश राय, डा. दीपक मिश्रा, डा. शशिकांत सहित अन्य वैज्ञानिकों ने ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव के विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता की। समापन अवसर पर प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने वाले किसानों एवं प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण.पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त तकनीकी ज्ञान को अपने खेतों में अपनाने तथा अन्य किसानों को भी फसल अवशेष प्रबंधन एवं पराली न जलाने के लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया।

R.N.i.NO.
UPHIN/2008/
29355
डाक पंजीकन
संख्या KANPUR
Cty 328/2012

दैनिक
वक्त दर्शन

कानपुर से प्रकाशित, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, पंजाब, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र एवं दिल्ली, मुम्बई, तेलंगाना

वर्षः 18 | अंक :226 | कानपुर, रविवार 13 सितम्बर 2026 | पृष्ठ : 8

फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण हुआ संपन्न

हरिओम गुप्ता

कानपुर नगर वक्त दर्शन प्रशासनिक कार्यालय गोपाल नगर संवाददाता चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के अंतर्गत 卐फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका卐 विषय पर आयोजित पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज सफलतापूर्वक समापन हुआ।प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों एवं प्रतिभागियों को फसल अवशेषों के वैज्ञानिक एवं उचित प्रबंधन, पराली जलाने से होने वाले पर्यावरणीय एवं मृदा संबंधी दुष्प्रभावों तथा फसल अवशेषों के उपयोग की आधुनिक तकनीकों के प्रति जागरूक एवं प्रशिक्षित करना रहा।

पाच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग, अवशेषों को खेत में मिलाने, अवशेषों से मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार करने तथा पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में व्यावहारिक एवं तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपलब्ध आधुनिक कृषि तकनीकों एवं यंत्रीकरण को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

समापन अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए फसल अवशेषों को समस्या के बजाय संसाधन के रूप में उपयोग करने तथा मृदा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिक अवशेष प्रबंधन तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया।प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. खलील खान ने किसानों के साथ संवाद करते हुए फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, कृषि यंत्रों के उचित उपयोग तथा मृदा स्वास्थ्य संरक्षण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। उन्होंने किसानों को खेत में फसल अवशेषों के प्रभावी प्रबंधन के लिए आधुनिक यंत्रीकरण को अपनाने के लिए भी प्रेरित किया।कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ राजेश राय, डॉक्टर दीपक मिश्रा, डॉक्टर शशिकांत सहित अन्य वैज्ञानिकों ने ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव (ऋ्ब्ब्ुश्व) के विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता की।समापन अवसर पर प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने वाले किसानों एवं प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त तकनीकी ज्ञान को अपने खेतों में अपनाने तथा अन्य किसानों को भी फसल अवशेष प्रबंधन एवं पराली न जलाने के लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया।

अमर उजाला 13/09/2026

पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभाव बताए

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के अधीन कृषि विज्ञान केंद्र, दिलीपनगर में फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत आयोजित पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका विषय पर हुए प्रशिक्षण में किसानों को पराली जलाने से होने वाले नुकसान की जानकारी दी गई। डॉ. अरुण कुमार सिंह ने किसानों से अवशेषों को समस्या के बजाय संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने की अपील की। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. खलील खान ने आधुनिक यंत्रीकरण अपनाने पर जोर दिया। डॉ. राजेश राय, डॉ. दीपक मिश्रा, डॉ. शशिकांत सहित वैज्ञानिक और आरएडब्ल्यूई विद्यार्थी मौजूद रहे। (ब्यूरो)

दैनिक
नगर संवाद
हम बनेंगे, आपकी आवाज़
R.N.
लखनऊ, उन्नाव, फतेहपुर, उरई, झांसी, इटावा, कुशीनगर, हाथरस, एटा, कन्नौज, बाराबंकी, आगरा में प्रसारित व कान
वर्ष : 10 अंक : 249 कानपुर , 13 सितम्बर, रविवार 2026 पृष्ठ : 8

फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण हुआ संपन्न

हरि ओम गुप्ता

कानपुर (नगर संवाद)।चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के अंतर्गत ह्लफसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिकाह्व विषय पर आयोजित पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज सफलतापूर्वक समापन हुआ।प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों एवं प्रतिभागियों को फसल अवशेषों के वैज्ञानिक एवं उचित प्रबंधन, पराली जलाने से होने वाले पर्यावरणीय एवं मृदा संबंधी दुष्प्रभावों तथा फसल अवशेषों के उपयोग की आधुनिक तकनीकों के प्रति जागरूक एवं प्रशिक्षित करना रहा।पाच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न

तकनीकों, आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग, अवशेषों को खेत में मिलाने, अवशेषों से मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार करने तथा पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में व्यावहारिक एवं तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपलब्ध आधुनिक कृषि तकनीकों एवं यंत्रीकरण को अपनाने के लिए प्रेरित किया।समापन अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए फसल अवशेषों को समस्या के बजाय संसाधन के रूप में उपयोग करने तथा मृदा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिक अवशेष प्रबंधन तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया।प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. खलील खान ने किसानों के साथ संवाद करते हुए फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, कृषि यंत्रों के उचित उपयोग तथा मृदा स्वास्थ्य संरक्षण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। उन्होंने किसानों को खेत में फसल अवशेषों के प्रभावी प्रबंधन के लिए आधुनिक यंत्रीकरण को अपनाने के लिए भी प्रेरित किया।कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ राजेश राय, डॉक्टर दीपक मिश्रा, डॉक्टर शशिकांत सहित अन्य वैज्ञानिकों ने ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव के विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता की।समापन अवसर पर प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने वाले किसानों एवं प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त तकनीकी ज्ञान को अपने खेतों में अपनाने तथा अन्य किसानों को भी फसल अवशेष प्रबंधन एवं पराली न जलाने के लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया।

VPL

वर्ष 11 अंक 335
पृष्ठ 12
नई दिल्ली, रविवार
13 सितंबर 2026

मूल्य: 4 रुपये

नेशनल एक्सप्रेस

हर खबर समय पर

nationalexpressindia | nationalexpressindia | www.nationalexpress.co.in

फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण हुआ संपन्न

शनल एक्सप्रेस अमित पटेल

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं ौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के धीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा फसल अवशेष बंधन परियोजना के अंतर्गत फसल अवशेष प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य सुधार में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका" विषय पर आयोजित पाँच दिवसीय कृषक शिक्षण कार्यक्रम का आज सफलतापूर्वक समापन हुआ।प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों एवं प्रतिभागियों को फसल अवशेषों के वैज्ञानिक एवं उचित प्रबंधन, पराली जलाने से होने वाले पर्यावरणीय एवं मृदा संबंधी दुष्प्रभावों तथा फसल अवशेषों के

उपयोग की आधुनिक तकनीकों के प्रति जागरूक एवं प्रशिक्षित करना रहा। पाच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग, अवशेषों को खेत में मिलाने, अवशेषों से मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार करने तथा पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में व्यावहारिक एवं तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपलब्ध आधुनिक कृषि तकनीकों एवं यंत्रीकरण को अपनाने के लिए प्रेरित किया। समापन अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए फसल अवशेषों को समस्या के बजाय संसाधन के रूप में उपयोग करने तथा मृदा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिक अवशेष प्रबंधन तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया।प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. खलील खान ने किसानों के साथ संवाद करते हुए फसल अवशेष प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों, कृषि यंत्रों के उचित उपयोग तथा मृदा स्वास्थ्य संरक्षण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी साझा की।